आपके
जाने के बाद

के शंकर सौम्य

शब्दांकुर प्रकाशन
SHABDANKUR PRAKASHAN

आपके
जाने के बाद

ISBN : 978-93-85776-61-8

रचनाकार
के शंकर सौम्य

संस्करण : प्रथम (2020)
मूल्य : ₹150/-

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

टाइपसेटिंग
आयशा

आवरण
k shakar

मुद्रक
आर्यन डिजिटल प्रैस, दिल्ली

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। लेखक की अनुमति के बिना इसके किसी भी अंग का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक
शब्दांकुर प्रकाशन
J-2nd-41, मदनगीर, नई दिल्ली 110062
दूरभाष : 09811863500
Email: shabdankurprakashan@gmail.com

अनुक्रम

तुम मिले तो ज़िंदगी ये ज़िंदगी सी हो गयी	:	05
उसकी पलकों के साये से, डर जाती है भरी दुपहरी	:	06
चाँद सितारे अंबर पर्वत बादल जैसा है कोई	:	07
शाम ही से उदास बैठा है	:	08
मिरी ज़िंदादिली से डरता है	:	09
बिन तिरे ख़ुद से जुदा है ज़िंदगी	:	10
पड़ा रहता है दिल तनहा तिरी दहलीज़ के आगे	:	11
गर्म साँसों में खलबली होगी	:	12
खो गया है एक लम्हे की तरह	:	13
झुलसती धूप के परदे में कुछ बादल खड़े होंगे	:	14
मुझे तुम मिल जो जाते तो ज़माना मिल गया होता	:	15
हर घड़ी सोचता रहा तुमको	:	16
शाम होते हो गया सूरज अचानक लापता	:	17
चल चलें उस आसमां के छोर तक	:	18
अब ज़हर दे या दे दवा साक़ी	:	19
रुख़सती के वक़्त पलपल सिसकियाँ भरता रहा	:	20
रात के साये में फिर से ढल रहा है	:	21
प्रीत का महका हुआ चंदन बना दो	:	22
गया बीत चाहत का मौसम, चुभते हैं यादों के भाले	:	23
तिरे कदमों की धूल मिल जाती	:	24
ज़िंदगी में न ग़म को हवा दीजिए	:	25
क्या बताऊँ इस कदर टूटा हुआ हूँ	:	26
दर्द के घर में सजाता है मुझे	:	27
हमने जब से गीत सुनाना छोड़ दिया	:	28
सब्र मेरा आज़माना चाहता है	:	29
उम्र के अंधे कुओं का क्या करूँ	:	30
ढली है धूप जीवन की, अभी तो शाम बाकी है	:	31
हर गीत मुहब्बत का सुनाया है आपको	:	32
जीवन अजब कहानी है	:	33
हम भले न याद मुद्दत तक रहेंगे	:	34
आपको छूकर शराबी हो गयी	:	35
घूमकर कश्मीर से कन्याकुमारी देख ली	:	36
आप तो कहते थे हमको ज़िंदगी मिल जाएगी	:	37

इक नदी को छू के सागर हो गया : 38
दिल के कमरे में अँधेरा छोड़ आया : 39
बीती शब तुम ख़्वाब में आना भूल गये : 40
वक़्त की मनमानियाँ बढ़ने लगी हैं : 41
तुमने मुझमें अक्सर संगदिल देखा है : 42
वक़्त से लम्हे चुराकर चल मिलें : 43
या तो मुझको भूल जाना तुम ख़ुदा के वास्ते : 44
आप पर जब निगाह लगती है : 45
याद वाले आसमां पर ग़म की बदली रो पड़ी : 46
रिमझिम-रिमझिम आँसू बरसे : 47
थीं बहुत मशहूर पहले मनचली बातें तुम्हारी : 48
तेरे दिल में थोड़ी जगह चाहिए : 49
हँस के देखा जिसे वो तिरा हो गया : 50
साथ तुम्हारे पूरी है : 51
मिरे अश्कों में ये ढलने लगा है : 52
इक समय था, रोज़ आती थीं तुम्हारी चिट्ठियाँ : 53
हुस्न की हो बहर इश्क़ के काफ़िये : 54
रहा कोई है काट ज़िंदगी : 55
मिरे हर ज़ख़्म की दवा भी है : 56
सब्र उसने भी पा लिया होगा : 57
बेचकर नींदों को थोड़ी रात ले आया हूँ मैं : 58
जोग लेकर जोगिया मन हो गया है : 59
बड़ी मुद्दत के बाद देखी है : 60
प्रीत का मौसम बनाकर साथ रख लो : 61
किसी जादू के दीपक को रगड़कर : 62
जागती रातों में पलकें खटखटाकर चल दिए : 63
अनमनी सी ज़िंदगी चुभती रही : 64
यूँ नहीं शिकवा नहीं है आपसे : 65
आँसुओं से और कभी हँसकर लिखा है : 66
आपने जब से किनारा कर लिया : 67
उम्र के ज़ख़्म ढो रहा होगा : 68
तिरी दिलकश अदा में जी के हर मौसम निकलता है : 69
इश्क़ ने कुछ यूँ छुआ कि सबसे लड़कर आ गये : 70
कुछ अधूरी ख्वाहिशों में तुमको सोचा था बहुत : 71
ज़िंदगानी थम गई है आपके जाने के बाद : 72

■ ■ ■

तुम मिले तो ज़िंदगी ये ज़िंदगी सी हो गयी
दर्द में जो आह निकली शाइरी सी हो गयी

मन अकेला प्रीत के मेले में जाकर खो गया
साँस सरगम और धड़कन बाँसुरी सी हो गयी

एकटक उसको निहारा, थम गया सारा जहां
नींद से उस दिन से मेरी दुश्मनी सी हो गयी

घोर काली रात में वीरान राहें मौन थीं
इक झलक देखी तुम्हारी रौशनी सी हो गयी

हिचकियों के शंख गूँजे धड़कनों की घंटियाँ
आपके आने से दिल में आरती सी हो गयी

इक झलक में सैकड़ों सदियाँ सहमकर रह गयीं
बस तभी से 'सौम्य' की वो स्वामिनी सी हो गयी

❑❑❑

उसकी पलकों के साये से, डर जाती है भरी दुपहरी
ज़ुल्फ़ घटा घनघोर घिरे तो, मुस्काती है भरी दुपहरी

जब भी हम-तुम मिल जाते थे, ये घंटों सुस्ताती थी
क्या बतलाऊँ तुम बिन कितना गरमाती है भरी दुपहरी

गर्मी की छुट्टी में ये भी तुमसे मिलने आती थी
आज मगर तुमको न पाकर, झुँझलाती है भरी दुपहरी

यादों की चादर को ओढ़े, जब भी तनहाई में बैठूँ
तेरे मन की सारी बातें, बतलाती है भरी दुपहरी

कभी तुम्हारी दो आँखों में मोती बनकर चमकी थी
आज तुम्हारी एक झलक को तरसाती है भरी दुपहरी

प्यार, मुहब्बत, चाहत, उल्फ़त, इनके माने ढूँढूँ जब
नाम तुम्हारा लेकर अक्सर, मुस्काती है भरी दुपहरी

'सौम्य' वो जब भी बिछड़ा साथी, ज़हनो-दिल पर छाता है
बीते मौसम की यादों में, याद आती है भरी दुपहरी

❑❑❑

चाँद सितारे अंबर पर्वत बादल जैसा है कोई
तितली जुगनू धूप मंजुरी कोंपल जैसा है कोई

अहसासों के कोहरे में एक धुँधला अक्स उभरता है
बारिश बूँदें थिरकन कंपन हलचल जैसा है कोई

उसके रूप में घुलकर मेरा सादापन काफ़ूर हुआ
चंदन बिंदिया रोली कुमकुम काजल जैसा है कोई

सूखे फूलों सा बैठा है दिल की बंद किताबों में
दर्द कसक बेचैनी तड़पन घायल जैसा है कोई

उम्मीदों की चौखट पर वो दस्तक देकर लौट गया
अल्हड़ नटखट नादां शायर पागल जैसा है कोई

पलकों के तहखाने में वो कैद है कितने बरसों से
भोर चाँदनी चितवन बचपन आँचल जैसा है कोई

'सौम्य' हज़ारों लम्हों के वो सन्नाटों में गूँज रहा
चूड़ी कँगना झुमके घुँघरू पायल जैसा है कोई

❑❑❑

शाम ही से उदास बैठा है
वे कहीं आसपास बैठा है

आज आई है याद फिर उसकी
आइना बदहवास बैठा है

ज़िंदगी नाम तिरे लिख आया
मुझमें एक देवदास बैठा है

तुम जहाँ छोड़कर गए मुझको
दिल वहीं बाइपास बैठा है

'सौम्य' छूकर उसे ख़यालों में
भूलकर भूख-प्यास बैठा है

❑❑❑

मिरी ज़िंदादिली से डरता है
ये आँसू है, ख़ुशी से डरता है

भले वो रात का हो शहज़ादा
अँधेरा रौशनी से डरता है

हमारी प्यास पी गया फिर भी
समंदर तिश्नगी से डरता है

तिरी चाहत में लुटा था जब से
दिल मिरा दिल्लगी से डरता है

चलो अब 'सौम्य' कहीं चलते हैं
मन यहाँ चाँदनी से डरता है

❑❑❑

बिन तिरे ख़ुद से जुदा है ज़िंदगी
एक टूटा आइना है ज़िंदगी

आपकी नज़रों से जब टकरा गई
बस तभी से गुमशुदा है ज़िंदगी

बांध रक्खा है मुझे अपनी बहर में
सच कहूँ इक शायरा है ज़िंदगी

बिन तुम्हारे कल फफक-कर रो पड़ी
इस कदर ये ग़मज़दा है ज़िंदगी

'सौम्य' कहता था है ख़ुशियों का जहां
आज जाना इक सज़ा है ज़िंदगी

❑❑❑

पड़ा रहता है दिल तनहा तिरी दहलीज़ के आगे
संजोया था कभी सपना तिरी दहलीज़ के आगे

तभी से ज़िंदगी मुझको बड़ी मासूम लगती है
दिखा था जब तिरा चेहरा तिरी दहलीज़ के आगे

नशा ऐसा चढ़ा, उस वक़्त से फिर होश न आया
पड़ा था जब कदम पहला तिरी दहलीज़ के आगे

बहुत शिकवा शिकायत मिन्नतें फ़रियाद लेकर के
रहा मैं उम्रभर भटका तिरी दहलीज़ के आगे

बरसकर प्यार के मौसम में ये जज़्बात के आँसू
सदा करते रहे सजदा तिरी दहलीज़ के आगे

मुझे जब 'सौम्य' रातों में किसी की याद आती है
युही ख़्वाबों में हूँ फिरता तिरी दहलीज़ के आगे

❑❑❑

गर्म साँसों में खलबली होगी
धूप बादल से मिल रही होगी

सरचढ़ा आसमां बरसता है
ये ज़मीं यूँ ही मर-मिटी होगी

आँसुओं में दबे थे अंगारे
आग दामन पे आ गयी होगी

याद के गाँव में वो बंजारन
हर घड़ी मुझको ढूँढ़ती होगी

सामने जब कभी वो आयेंगे
एक लम्हे-सी एक सदी होगी

'सौम्य' इक पल को उसको देखा था
ज़िंदगी आज भी वहीं होगी

❑❑❑

खो गया है एक लम्हे की तरह
सामने रहता था शीशे की तरह

बस उसी रहबर को है दिल ढूँढ़ता
जो सफ़र में गुम है रस्ते की तरह

इक तुम्हारी ख़्वाहिशों में जागता हूँ
रातभर गुमनाम किस्से की तरह

दूर जाकर आप से ऐसा लगा
पेड़ से टूटा मैं पत्ते की तरह

आसमां धरती हवा बादल सभी
दिख रहे हैं तेरे जलवे की तरह

बिन तुम्हारे दिल बहुत मायूस है
रो रहा है एक बच्चे की तरह

'सौम्य' जिसको नासमझ कहते थे तुम
वो लगा मुझको फरिश्ते की तरह

❑❑❑

झुलसती धूप के परदे में कुछ बादल खड़े होंगे
कहीं पलकों के साये में सपन कोमल खड़े होंगे

विरह की आँधियों से तुम कभी मायूस मत होना
किसी अंजान रस्ते पर मिलन के पल खड़े होंगे

कहीं आँखों के आँगन में है आई बाढ़ आँसू की
सजल नैनों में टूटे ख़्वाब के जंगल खड़े होंगे

गुज़रते वक़्त से लड़कर वो बिछड़े थे कभी मुझसे
पुरानी याद में सहमे वो पल घायल खड़े होंगे

वो दिल की रहगुज़र से आज निकले हैं अचानक ही
सजे सँवरे अनेकों राह में पागल खड़े होंगे

❑❑❑

मुझे तुम मिल जो जाते तो ज़माना मिल गया होता
किसी शाइर के लब्ज़ों को तराना मिल गया होता

नयन से ख़्वाब का रिश्ता वहाँ गर टूट न जाता
यहाँ मुफ़लिस को चाहत ख़ज़ाना मिल गया होता

तिरे आँसू चुराकर कोई गीतों में पिरो लेता
किसी पागल को जीने का बहाना मिल गया होता

घनी ज़ुल्फ़ें मुहब्बत की घटाएँ बन के घिर जातीं
किसी भटके मुसाफ़िर को ठिकाना मिल गया होता

सनम के दर से गर वो 'सौम्य' वापस लौट न आता
दिले-दरवेश को दिलकश फ़साना मिल गया होता

❑❑❑

हर घड़ी सोचता रहा तुमको
दरबदर खोजता रहा तुमको

सुर्ख़ चेहरे पे थे कई किस्से
रातभर बाँचता रहा तुमको

रूबरू आइने के आकर मैं
ख़ुद में ही देखता रहा तुमको

तुम मिले थे जहाँ, वहीं पर मैं
मुद्दतों ढूँढ़ता रहा तुमको

चाँद में देखकर तिरा चेहरा
नयन से चूमता रहा तुमको

❑❑❑

शाम होते हो गया सूरज अचानक लापता
रात के आगोश में घिरने लगा सारा जहां

इक नदी प्यासी तरसती ही रही बरसात में
भूलकर जैसे समंदर हो गया है बेवफ़ा

दौड़ आया सावनी बूंदों को पाने के लिए
प्यास की पावन परीक्षा में पपीहा सिरफिरा

रातभर सहमा रहा सूरजमुखी हो अनमना
भोर में सुनकर सदा आया दिवस का देवता

'सौम्य' ताकत प्यार में है आज़माकर देख लो
एक पागल ने बनाया पर्वतों में रास्ता

❑❑❑

चल चलें उस आसमां के छोर तक
रात की वीरानियों से भोर तक

सूखते हैं ख़्वाब चाहत की छतों पर
हर तरफ़ इस ओर से उस ओर तक

बेसबब कंगन तुम्हारे बज उठे
गूँज पहुँची है घटा घनघोर तक

हो गया रुख़सत भले, मेरा है पर
वो रहेगा बस मिरा हर दौर तक

लापता है 'सौम्य' जाकर ढूँढ़ लो
चूड़ियों से पायलों के शोर तक

❑❑❑

अब ज़हर दे या दे दवा साक़ी
बस मुझे हँस के तू पिला साक़ी

प्यास भरके मैं दिल में लाया हूँ
न मुझको इस कदर सता साक़ी

एक प्याले में सारे ग़म भर दे
और उसमें वफ़ा मिला साक़ी

सैकड़ों बोतलों पे भारी है
वो छुअन तेरी वो अदा साक़ी

खो गया है या मिल गया है वो
'सौम्य' की कुछ ख़बर बता साक़ी

❑❑❑

रुख़सती के वक़्त पलपल सिसकियाँ भरता रहा
दिल तिरी चौखट पे बैठा मिन्नतें करता रहा

डूबते सूरज ने भर दी माँग प्यारी साँझ की
आसमां के छोर से सिंदूर सा झरता रहा

क़त्ल की सब साजिशें जब हो गई नाकाम तब
दिल तिरा रखने को मैं तो ख़ुद-ब-ख़ुद मरता रहा

इक खिलौना आरज़ू का गिर के टूटा हाथ से
सुरमई आँखों का सपना अश्क में तरता रहा

आपके ही 'सौम्य' ख़्वाबों में रहा मैं उम्रभर
नींद न टूटे यही बस सोचकर डरता रहा

❑❑❑

रात के साये में फिर से ढल रहा है
फिर चरागों को अँधेरा खल रहा है

प्यास का उपवास आजीवन निभाया
और सर पर उम्रभर बादल रहा है

एक दिन ख़्वाबों में उसको छू लिया था
बस तभी से तन अगन-सा जल रहा है

तुम चले हो इक नई दुनिया बसाने
ये न देखा हाथ कोई मल रहा है

'सौम्य' मुझको देखकर हैरान है वो
आइने में दिख कोई पागल रहा है

❑❑❑

प्रीत का महका हुआ चंदन बना दो
तुम घटा बनकर मुझे सावन बना दो

इक तुम्हारा अक्स ही मुझमें दिखे जो
डालकर नज़रे मुझे दरपन बना दो

रह गई कितनी ही बातें अनकही सी
लौटकर हर पल को तुम बचपन बना दो

साँस में इक बेकरारी की उमस है
दिल को महका-सा सनम मधुबन बना दो

दर्द के अंधे सफ़र में खो न जाऊँ
हाथ थामो और मुझे पावन बना दो

मैं तुम्हारी हर तड़प को पा सकूँ
'सौम्य' को दिल की सनम धड़कन बना दो

❑❑❑

गया बीत चाहत का मौसम, चुभते हैं यादों के भाले
कभी अँधेरे दिल बहलाते, कभी सताते यार उजाले

बहुत चाहकर मिले नहीं हम, अपनी-अपनी मजबूरी थी
कहीं तिरे हाथों की मेहँदी, कहीं मिरे पैरों के छाले

नशा ज़माने पर छा जाता, अगर एक हो जाते तो
वहाँ तिरी पलकों के आँसू, यहाँ मिरी आँखों के प्याले

सभी राह चौराहे सड़कें, ढूँढ़ रहे थे हमको ही
उधर याद में धूप बिलखती, इधर सिसकते बादल काले

कहाँ-कहाँ ना 'सौम्य' मन्नतें और प्रर्थना की हमने
कहाँ गए वो मंदिर-मस्ज़िद, कहाँ गए वो चर्च-शिवाले

❑❑❑

तिरे कदमों की धूल मिल जाती
मिरी आवारगी सँभल जाती

तुम अगर साथ चल दिए होते
रास्तों की थकन निकल जाती

दिल के इस अंजुमन में आ जाते
मेरी हर जुस्तजू मचल जाती

हिज्र की रात थी बहुत मुश्किल
आप कहते तो रात ढल जाती

'सौम्य' वो बूँद तेरे आँसू की
हमारी प्यास को निगल जाती

❑❑❑

ज़िंदगी में न ग़म को हवा दीजिए
ज़िंदगी की कसम मुस्कुरा दीजिए

ढूँढ़ता हूँ मुहब्बत का कोई नगर
आप दिल में सनम आसरा दीजिए

या तो जन्मों-जनम साथ रहना मेरे
या मुझे आज से ही भुला दीजिए

आज की रात पूनम की हो जाएगी
आज चेहरे से घूँघट उठा दीजिए

दर्द आँसू चुभन ग़म दिया आपने
हो सके तो ज़रा हौसला दीजिए

'सौम्य' आया है दहलीज़ पर आपकी
या सज़ा दीजिए या दुआ दीजिए

❑❑❑

क्या बताऊँ इस कदर टूटा हुआ हूँ
एक नग़मा दर्द का छेड़ा हुआ हूँ

दो निगाहों से निगाहें क्या मिली थीं
उस घड़ी से आज तक खोया हुआ हूँ

टूटते ख़्वाबों का मेला लग गया है
रो नहीं पाया मगर सहमा हुआ हूँ

जिस कथानक में मुझे तुम मिल गये थे
आज भी तनहा वहीं बैठा हुआ हूँ

'सौम्य' दुनिया की हसीं जादूगरी में
जीतकर भी मैं अब हारा हुआ हूँ

❑❑❑

दर्द के घर में सजाता है मुझे
ग़म तिरा मुझसे चुराता है मुझे

बिन मिरे वो भी नहीं रहता कभी
ख़्वाब में अपने बुलाता है मुझे

एक प्याला हूँ मैं उसकी बज़्म का
जब मचलता है उठाता है मुझे

बन के आँसू कैद हूँ नैनों में मैं
क्यों दया करके बहाता है मुझे

'सौम्य' तेरा इश्क़ भी क्या खूब है
बूँद में सागर दिखाता है मुझे

❑❑❑

हमने जब से गीत सुनाना छोड़ दिया
उसने भी हँसना-मुस्काना छोड़ दिया

महफ़िल-महफ़िल भटके तेरे दीवाने
तूने जब से नैन मिलाना छोड़ दिया

पागलपन की हद तक प्यार किया मैंने
सोना-वोना खना-वाना छोड़ दिया

सिर्फ तुम्हारे बारे में पूछेंगे सब
मैंने बाहर आना-जाना छोड़ दिया

'सौम्य' तुम्हारी रात कटेगी अब कैसे
उसने तो अब ख़्वाब में आना छोड़ दिया

❑❑❑

सब्र मेरा आज़माना चाहता है
ग़ैर से वो दिल लगाना चाहता है

फ़ासलों पर हसरतों को वारकर
दिल तुम्हारे पास आना चाहता है

इक हसीं नग़मे-सा होठों पर सजाकर
इश्क़ तुमको गुनगुनाना चाहता है

प्यास की बेचैनियों में रिंद मन
पी के तुमको लड़खड़ाना चाहता है

बिन तिरे कैसे कटा हर एक पल
आइना तुमको बताना चाहता है

'सौम्य' दिल की हलचलों के बीच में
दर्द तेरा ही सजाना चाहता है

❑❑❑

उम्र के अंधे कुओं का क्या करूँ
बेबसी के केंचुओं का क्या करूँ

जागकर तकिया सुबह कहने लगा
आपके इन आँसुओं का क्या करूँ

इक नज़र दिल में चुभी कुछ इस कदर
चोर बोला चाकुओं का क्या करूँ

वो गये तब, दिल के गुलशन ने कहा
गुलबदन की ख़ुश्बुओं का क्या करूँ

मैं उलझकर आजतक सुलझा नहीं
उन नशीले गेसुओं का क्या करूँ

वो हवा बनकर मुझे छू-भर गयी
तन पे डसते बिच्छुओं का क्या करूँ

'सौम्य' ने देखा जो अपनेआप को
पूछ बैठा आइनों का क्या करूँ

❑❑❑

ढली है धूप जीवन की, अभी तो शाम बाकी है
मुहब्बत के फ़साने का अभी अंजाम बाकी है

तुम्हारे आँसुओं को पी के भी प्यासा ही रहता हूँ
ज़रा कुछ देर बैठो इक नज़र कर जाम बाकी है

चले आओ के साँसें जिस्म से रुख़सत हैं होने को
कि हसरत के चराग़ों में तुम्हारा नाम बाकी है

दबी है आग यादों की, सुलगते दिल के खंडहर में
हवा है कह रही कोई हसीं कोहराम बाकी है

अचानक से मिरे अंदर महक उट्ठा है इक ज़र्रा
लगा धड़कन की बग़िया में वो इक गुलफ़ाम बाकी है

अभी तुम 'सौम्य' की जां को यूँ लेकर जा नहीं सकते
अभी इस साँस का मुझको चुकाना दाम बाकी है

❑❑❑

हर गीत मुहब्बत का सुनाया है आपको
ग़म में भी मैंने हँस के दिखाया है आपको

नज़रों के चित्रकार ने मन में उतारकर
धड़कन के कैनवस पे सजाया है आपको

शब्दों में बाँधकर वो हसीं शोख़ शख़्सियत
हर बज़्म में गीतों-सा सुनाया है आपको

इस बाग़ से उस बाग़ तक भँवरे-सा डोलकर
इक फूल के मधुकण से चुराया है आपको

इस दिल के राहगीर ने मीलों के सफ़र पर
गुमनाम इक तलाश में पाया है आपको

❑❑❑

जीवन अजब कहानी है
डगर-डगर हैरानी है

उसका ग़ुस्सा आग हुआ
मेरे आँसू पानी है

तुम कहते हो प्यार जिसे
रब की पाक निशनी है

हिचकी आकर कहती है
तुमसे प्रीत निभानी है

घर गिरवी हो जाएगा
बेटी हुई सयानी है

जब से उसको प्यार हुआ
दुनिया की निगरानी है

'सौम्य' हमारा दिल है या
ग़म की खींचातानी है

❑❑❑

हम भले न याद मुद्दत तक रहेंगे
प्यार के दो पल क़यामत तक रहेंगे

एक बंजारिन-सी है ये ज़िंदगी
गीत इसकी हर इनायत तक रहेंगे

आपकी आँखों में मेरे रतजगे
नींद की बेचैन हसरत तक रहेंगे

चंद कदमों के निशां चाहे मिटें
काफ़िले यादों के जन्नत तक रहेंगे

'सौम्य' के अल्फ़ाज़ गूँजेंगे ज़मीं से
आसमानों की हुकूमत तक रहेंगे

❑❑❑

आपको छूकर शराबी हो गयी
रात काली माहताबी हो गयी

बस युँही मैंने मिलायी थी नज़र
शर्म से वो तो गुलाबी हो गयी

जब सुलगते उसके होठों पर गिरी
बूँद आँसू की शराबी हो गयी

इश्क़ में हम बिन पिये जब लड़खड़ाये
क्या कहीं इसमें खराबी हो गयी

आँसुओं ने लिख दिए अशआर हैं
वो नज़र उसकी किताबी हो गयी

'सौम्य' सौदा कर लिया दिल का मगर
किस तरह ये बेहिसाबी हो गयी

❑❑❑

घूमकर कश्मीर से कन्याकुमारी देख ली
पर नहीं मिटती है दिल की ये ख़ुमारी, देख ली

उस घड़ी को नींद सारी सौंप आया हूँ सनम
जिस घड़ी तस्वीर वो मैंने तुम्हारी देख ली

इश्क़ के मौसम में इक पाकीज़गी घुल जाएगी
गर किसी मंज़री ने उसकी बेक़रारी देख ली

एक आवारा-सा लम्हा मिल गया कल शब मुझे
संग उसके पल में मैंने उम्र सारी देख ली

❑❑❑

आप तो कहते थे हमको ज़िंदगी मिल जाएगी
दर्द के बादल छटेंगे और ख़ुशी मिल जाएगी

था किया जुर्मे मुहब्बत एक दिन ये सोचकर
क्या पता उसकी नज़र की हथकड़ी मिल जाएगी

बस यही अहसास लेकर उम्रभर चलता रहा
अब खड़ी मिल जाएगी वो अब खड़ी मिल जाएगी

एक पागल सिरफिरे ने ये कहा था एक दिन
मौत से आगे निकल जा, ज़िंदगी मिल जाएगी

'सौम्य' की ग़ज़लों में बस एक पल बिताकर देखिये
आपको मदहोश चाहत की सदी मिल जाएगी

❑❑❑

इक नदी को छू के सागर हो गया
दिल तुम्हें पाकर के शाइर हो गया

आइना बनकर मैं आया सामने
देखकर मुझको वो पत्थर हो गया

वो ज़रा सा देखकर क्या मुस्कुराये
पार मेरे दिल के ख़ंजर हो गया

याद की चिंगारियाँ कुछ यूँ उठी
ये ज़हन जलता-सा मंज़र हो गया

जब ज़माने ने पिलाया था ज़हर
'सौम्य' विष पीकर के शंकर हो गया

❑❑❑

दिल के कमरे में अँधेरा छोड़ आया
मैं बहुत पीछे सवेरा छोड़ आया

आँधियाँ करने तबाही आ गयीं
ख़ुद-ब-ख़ुद ही मैं बसेरा छोड़ आया

मैं तो उसके आँसुओं को साथ लाया
वो वहीं पर दर्द मेरा छोड़ आया

जब अना और प्यास दोनों भीड़ गए
उस जगह बादल घनेरा छोड़ आया

❑❑❑

बीती शब तुम ख़्वाब में आना भूल गये
आग लगाकर आग बुझाना भूल गये

जिन-जिन पीने वालों ने उसको देखा
सारे के सारे मैखाना भूल गये

शाम ढले वो निकले जब अपने घर से
फूल महकना पंछी गाना भूल गये

जादूगरनी दो आँखों से आँख मिली
हम भी पल में यार ज़माना भूल गये

जाम चढ़ाया ज्योंही उसके होंठों का
मीना, मय, साक़ी, पैमाना भूल गये

महफ़िल में जब 'सौम्य' तुम्हारी याद आयी
गीत, ग़ज़ल और शेर सुनाना भूल गये

❑❑❑

वक़्त की मनमानियाँ बढ़ने लगी हैं
हर तरफ़ गुमनामियाँ बढ़ने लगी हैं

हुस्न के जलवे हवाओं में घुले हैं
इश्क़ की नादानियाँ बढ़ने लगी हैं

प्यार का सूरज जो सर से हट गया
दर्द की परछाइयाँ बढ़ने लगी हैं

हमसफ़र का हाथ छूटा हाथ से
राह की वीरानियाँ बढ़ने लगी हैं

ढूँढ़ता है दिल में इक बच्चा तुम्हें
इसकी अब शैतानियाँ बढ़ने लगी हैं

दिन-ब-दिन इस उम्र के दिन कम हुए
'सौम्य' की नाकामियाँ बढ़ने लगी हैं

❑❑❑

तुमने मुझमें अक्सर संगदिल देखा है
जब भी देखा है इक गाफ़िल देखा है

सूखे आँसू, पत्थर की आँखें देखीं
पर क्या तुमने मोम-सा मेरा दिल देखा है

तेरे जैसा कहीं मिला न कोई भी
जाकर हमने महफ़िल-महफ़िल देखा है

तुमने मुझको राह और भटकन देखा
मैने तुमको लक्ष्य और मंज़िल देखा है

एक अधूरी ख़्वाहिश के पागलपन ने
नैनों के आँगन को झिलमिल देखा है

इन आँखों में 'सौम्य' हज़ारों तूफ़ां हैं
मगर किसी ने इनमें साहिल देखा है

❑❑❑

वक़्त से लम्हे चुराकर चल मिलें
कुछ हसीं सपने सजाकर चल मिलें

टिमटिमाते सब सितारे सो गए
जुगनुओं से छिप-छिपाकर चल मिलें

रात की ख़ामोशियाँ जगने लगीं
आहटें दिल में दबाकर चल मिलें

बेकरारी राग मीठा छेड़ती
धडकनों को गुनगुनाकर चल मिलें

इक झलक की चाह पल-पल काटती
बेकली दिल से लगाकर चल मिलें

❑❑❑

या तो मुझको भूल जाना तुम ख़ुदा के वास्ते
या कसम अपनी निभाना तुम ख़ुदा के वास्ते

राह की दुश्वारियों में खो गए गर हम कहीं
गीत मेरे गुनगुनाना तुम ख़ुदा के वास्ते

आपकी आँखों में जलती आग से रौशन है दिल
आँसुओं से मत बुझाना तुम ख़ुदा के वास्ते

ये ज़माना आशिकों पर तंज़ करता है बहुत
बात में इसकी न आना तुम ख़ुदा के वास्ते

इश्क़ वाले आसमां पर रात फैले जब घनी
बन सितारा जगमगाना तुम ख़ुदा के वास्ते

'सौम्य' यादों के नशे से गर मैं बाहर आ गया
मय निगाहों से पिलाना तुम ख़ुदा के वास्ते

❑❑❑

आप पर जब निगाह लगती है
ज़िंदगी बेगुनाह लगती है

ख़्वाब जब आपके नहीं आते
रात तब और स्याह लगती है

तुम जिसे शाइरी समझते हो
वो मुझे इक कराह लगती है

तुम्हारे हिज्र में ये ज़िंदगानी
यार होती फ़नाह लगती है

'सौम्य' ग़ज़लों पे बिजलियों जैसी
आपकी वाह-वाह लगती है

❑❑❑

याद वाले आसमां पर ग़म की बदली रो पड़ी
बिन तुम्हारे रात काली, भोर उजली रो पड़ी

जब हकीकत की घुटन ने कर दिया पागल उसे
ख़्वाब में पनघट पे बैठी एक पगली रो पड़ी

रुख़सती के एक अरसे बाद जब कल वो दिखी
चूडियाँ, पाज़ेब, बिंदिया और हँसुली रो पड़ी

बाग़ चाहत का जलाकर चल दिया कोई मगर
दिल की कच्ची मेढ़ पर भावों की तितली रो पड़ी

लिख तो दी चिट्ठी उसे पर बिन पते भेजूँ कहाँ
सोचकर सिसकी कलम भी और अँगुली रो पड़ी

❑❑❑

रिमझिम-रिमझिम आँसू बरसे
और पपीहा मन का तरसे

ख़्वाब हज़ारों जी उठते हैं
एक तुम्हारे आने भर से

मुझमें जिसको ढूँढ़ रहे हो
चला गया वो शख़्स इधर से

उसकी याद की ख़ुश्बू लेकर
हिचकी आई है भीतर से

ग़म के सागर पीकर मैंने
सी ली है मुस्कान अधर से

'सौम्य' तुम्हारा रस्ता तकते
जाने बीते कितने अरसे

❑❑❑

थीं बहुत मशहूर पहले मनचली बातें तुम्हारी
अब ज़हन में गूँजती हैं अनकही बातें तुम्हारी

रातभर जागीं, सुबह होने पे थककर सो गईं
नर्म बिस्तर पर लिखी हैं सिलवटी बातें तुम्हारी

देखकर तुमको लगा कि जी उठा बचपन सनम
दूर बैठी मुँह चिढ़ाती नकचढ़ी बातें तुम्हारी

याद का कोहरा घना छाया रहा दिल पर मिरे
और उसके बाद बिख़री शबनमी बातें तुम्हारी

ख़ामुशी में डूबकर जब ज़िंदगी गुमसुम हुई
तब दिलों में करने आई गुदगुदी बातें तुम्हारी

'सौम्य' ख़ुद से दूर जाकर एक अरसा हो गया
हो गई पर क्यों अचानक अजनबी बातें तुम्हारी

❑❑❑

तेरे दिल में थोड़ी जगह चाहिए
दवा बेअसर है दुआ चाहिए

निहारूँ तुझे ही जनम दर जनम
मुझे कुछ न फिर या ख़ुदा चाहिए

दबी मन में चाहत की चिंगारियाँ
तेरी ख़्वाहिशों की हवा चाहिए

तुम्हारे ख़यालों की रौनक है इसमे
नहीं दिल में कोई शमां चाहिए

तेरे प्यार की जिसको दौलत मिले
उसे फिर ज़माने में क्या चाहिए

रहें 'सौम्य' उसके ही दोनों जहाँ
हमे न जमीं–आसमां चाहिए

❑❑❑

हँस के देखा जिसे वो तिरा हो गया
तेरे पहलू में उसका पता हो गया

कल तलक जो अकेला था मेरे बिना
अब सुना है कि वो बेवफ़ा हो गया

जब अचानक नज़र उस नज़र से मिली
हड़बड़ाहट में इक हादसा हो गया

छलछलाए थे कदमों पे आँसू मेरे
बस तभी से वो मेरा ख़ुदा हो गया

उनके ख़्वाबों का नींदों में आना हुआ
यूं शुरू इश्क का सिलसिला हो गया

था कभी 'सौम्य' मेरे वो ग़म का सबब
आजकल मेरे ग़म की दवा हो गया

❑❑❑

साथ तुम्हारे पूरी है
वरना जान अधूरी है

ज़हन-हिरन आवारा है
याद तेरी कस्तूरी है

तुम्हें रोक न पाऊँगा
बहुत बड़ी मजबूरी है

आँसू बनकर ढुलक गई
आँखों से अंगूरी है

आती जाती साँसों को
तेरा साथ ज़रूरी है

'सौम्य' तुम्हारा नाम लिया
धूप हुई सिंदूरी है

❑❑❑

मिरे अश्कों में ये ढलने लगा है
समंदर प्यास में जलने लगा है

बिताकर तीरगी में उम्र सारी
चराग़ों-सा दिया बलने लगा है

पुराने ख़त में इक तस्वीर देखी
नशा-सा याद में घुलने लगा है

सुहाना ख़्वाब जो टूटा अचानक
समंदर आँख में पलने लगा है

न जाओ छोड़कर मुझको अकेला
मिरा मन मोम-सा गलने लगा है

❑❑❑

इक समय था, रोज़ आती थीं तुम्हारी चिट्ठियाँ
आजकल तो सिर्फ़ आती हैं अचानक हिचकियाँ

खूब रोया चाँद, लेकर नाम तेरा रातभर
सुन के भी तू सुन न पाया यार उसकी सिसकियाँ

आसमां के कैनवस पर जो लिखा था रात ने
वो फ़साना दिल का पढ़के हैं मचलती बदलियाँ

मेरे अंदर का समंदर था बहुत ख़ामोश पर
छलछलाने आ गई हैं याद की कुछ बिजलियाँ

बस वही अख़बार जैसा हाल है अपना सनम
रोज़ मुझको छोड़ देते हैं वो पढ़कर सुर्खियाँ

बेवफ़ा यूँ कह रहे हो 'सौम्य' को क्योंकर भला
काश इन पैरों की तुम भी देख पाते बेड़ियाँ

❑❑❑

हुस्न की हो बहर इश्क़ के काफ़िये
और क्या चाहिए शायरी के लिये

हो सके तो वो अपनी हँसी भेज दो
ताकि जलते रहें ज़िंदगी के दिये

ये ज़मीं आसमां चाँद तारे हवा
किस तरह आपके बिन रहे, सोचिये

दो कदम वो चला था कभी साथ में
उम्रभर के लिए हम उसी के हुये

दर्द तू है, दवा भी तुही है सनम
तेरा तालिब जिये भी तो कैसे जिये

❑❑❑

रहा कोई है काट ज़िंदगी
लगे किसी को ठाठ ज़िंदगी

इस दुनिया के विद्यालय में
रोज़ नया-सा पाठ ज़िंदगी

पीस रही सब इच्छाओं को
चक्की के दो पाट ज़िंदगी

रोज़ तौलती सारे सुख-दुख
लगे तराज़ू-बाट ज़िंदगी

घोर निराशा की लहरों संग
उम्मीदों का घाट ज़िंदगी

'सौम्य' उनिंदा अल्हड़ मन है
और बान की खाट ज़िंदगी

❑❑❑

मिरे हर ज़ख़्म की दवा भी है
मगर वो दर्द का सिला भी है

दबी है हसरतों की चिंगारी
मेरी तलाश में हवा भी है

ज़रा सुन ग़ौर से तू ऐ मुश्किल
मेरे तो साथ वो ख़ुदा भी है

यकीनन वो गुज़रते हैं यहीं से
हवा के साथ कुछ नशा भी है

हुस्न वो 'सौम्य' है किताबों-सा
फ़साना दिल ने कुछ लिखा भी है

❑❑❑

सब्र उसने भी पा लिया होगा
किस तरह ज़ख़्म को सहा होगा

आज बरसा है दिल में बादल-सा
उसके अश्कों का सिलसिला होगा

दिले-नादां की चीख़ सुनकर के
वो सरे राह रुक गया होगा

बहुत मासूम है तितली की अदा
शर्म से फूल छिप गया होगा

तुम्हारे हुस्न के तसव्वुर में
आइना कब का लुट चुका होगा

तेरी यादों के शोख़ मौसम पर
हवा ने शेर कह दिया होगा

मुसाफ़िर के सफ़र सी ज़िंदगानी
मुझे वो 'सौम्य' ढूँढ़ता होगा

❑❑❑

बेचकर नींदों को थोड़ी रात ले आया हूँ मैं
कुछ अनूठे से हसीं जज़्बात ले आया हूँ मैं

एक गगरी आँसुओं की सागरों को बाँटकर
मुस्कुराने की सनम सौगात ले आया हूँ मैं

आज ही मैंने दुआओं में तुम्हें माँगा था यार
आज ही ख़्वाबों की इक बारात ले आया हूँ मैं

रेल में बैठे मुसाफ़िर की सुनी जो दास्तां
सुरमई अहसास की बरसात ले आया हूँ मैं

बस युँही अपनों से मिलने को गया था एक दिन
लौटते में कुछ नए आघात ले आया हूँ मैं

❑❑❑

जोग लेकर जोगिया मन हो गया है
आज फिर से इश्किया मन हो गया है

चाँदनी संग उसके अश्कों में नहाकर
डगमगाता साकिया मन हो गया है

वो महकती चिट्ठियाँ पढ़-पढ़के तेरी
यूँ लगा के डाकिया मन हो गया है

जब अचानक ज़िंदगी से तुम गए तो
सच बताऊँ मर्सिया मन हो गया है

चाहतों की सुर्खियाँ तुम बन गए हो
हसरतों का हाशिया मन हो गया है

जगमगाते तुम रदीफ़ों से हुए तो
सज-सँवरकर काफ़िया मन हो गया है

ज़िंदगी में 'सौम्य' खोकर आज सब कुछ
अजनबी-सा खूफ़िया मन हो गया है

❑❑❑

बड़ी मुद्दत के बाद देखी है
बता ऐ ज़िंदगी तू कैसी है

तिरे दर पर खड़ा दरवेश है दिल
तिरी झिड़की भी दुआ जैसी है

यही तो फलसफ़ा है कुदरत का
बहुत हैं काम उम्र थोड़ी है

जिसे मैं छोड़ आया था कहीं पर
सुना है वो मुझी में रहती है

तुम्हारे साथ एक लमहे में
मुकम्मल उम्र मैंने जी ली है

दुआ है ख़्वाब या हकीकत है
पलों में वो सदी के जैसी है

❑❑❑

प्रीत का मौसम बनाकर साथ रख लो
तुम मुझे हमदम बनाकर साथ रख लो

फिर मचल जाएँगी सारी हसरतें
बस मुझे प्रीतम बनाकर साथ रख लो

या पुराना एक नग़मा छेड़ दो तुम
या मुझे सरगम बनाकर साथ रख लो

प्यास लब तक आपके न आ सकेगी
हाँ, मुझे शबनम बनाकर साथ रख लो

वो चुरा लेगा तुम्हारे दर्दो-ग़म
'सौम्य' को मरहम बनाकर साथ रख लो

❑❑❑

किसी जादू के दीपक को रगड़कर
तुम्हारे पास आ जाऊँ मैं उड़कर

लगे हैं सूखने आँसू भी अब तो
बहुत रोया है दिल तुमसे बिछड़कर

मैं मजबूरन उसे न रोक पाया
वो पल-पल देखती रही मुड़कर

लगा जैसे कि बचपन मिल गया हो
तुम्हारे इक पुराने ख़त को पढ़कर

ज़रा पलकें उठाकर देख भी लो
यहाँ आया हूँ मैं दुनिया से लड़कर

❑❑❑

जागती रातों में पलकें खटखटाकर चल दिए
ख़्वाब तेरे जिस्मो–जां पर ज़ुल्म ढाकर चल दिए

वो जो कहते थे रहेंगे साथ मेरे उम्रभर
आज राहों में मिले नजरें बचाकर चल दिए

मैं अचानक पूछ बैठा उनके रोने का सबब
बात क्या थी और जाने क्या बताकर चल दिए

आँसुओं के ज्वार नैनों में दबाकर वो मिले
मुझको देखा, मुस्कुराए, कसमसाकर चल दिए

❑❑❑

अनमनी सी ज़िंदगी चुभती रही
आपकी नाराज़गी चुभती रही

किस तरह से दिन बिताये तुम कहो
हाँ मुझे तो हर घड़ी चुभती रही

आपकी आँखों में देखा गौर से
चंद बातें अनकही चुभती रही

एक सपना टूटकर बिखरा युँही
आँख में किरचें घनी चुभती रही

'सौम्य' उसकी याद आई रातभर
नर्म चादर मखमली चुभती रही

❑❑❑

यूँ नहीं शिकवा नहीं है आपसे
बस किया चर्चा नहीं है आपसे

दिल हसीं सपने सजाना छोड़ दे
इस कदर रूठा नहीं है आपसे

वो अचानक से मुझे यूँ कह गए
अब कोई रिश्ता नहीं है आपसे

सच बताना, जानकार या भूल से
क्या ये दिल टूटा नहीं है आपसे

'सौम्य' को दिल में ही रखना उम्रभर
और कुछ चाहा नहीं है आपसे

❑❑❑

आँसुओं से और कभी हँसकर लिखा है
इक तिरा ही वाकया अक्सर लिखा है

ज़िंदगी के कहकहों का गीत मैंने
दर्द के अम्बार पे चढ़कर लिखा है

चूमकर तुमने, मेरे इन दो लबों पर
हर दहकते प्रश्न का उत्तर लिखा है

क्या पता इसमें हो मेरा नाम भी
आँसुओं से तुमने जो शबभर लिखा है

देख लो ये दिल मिरा है मोम का
भूल से तुमने जिसे पत्थर लिखा है

'सौम्य' ने फुरकत की काली रात में
इस फ़साना इश्क़ का दिल पर लिखा है

❑❑❑

आपने जब से किनारा कर लिया
दर्द को मैंने गँवारा कर लिया

जब सुलगती प्यास आकर बस गई
लब ने अश्कों को इशारा कर लिया

हिचकियों ने धड़कनों को मात दे दी
ज़िक्र क्या तुमने हमारा कर लिया

हिज्र की रातें अँधेरी थी बहुत
याद का हर पल सितारा कर लिया

कैद करके ज़हन में यादें सभी
'सौम्य' जीने के सहारा कर लिया

❑❑❑

उम्र के ज़ख़्म ढो रहा होगा
वक़्त पलकें भिगो रहा होगा

चाँद है लापता कई शब से
नर्म ज़ुल्फ़ों में सो रहा होगा

ये मिरी दास्तान सुनकर के
दर्द को दर्द हो रहा होगा

मन के आँगन में बचपना बैठा
चंद ख़्वाबों को बो रहा होगा

'सौम्य' का कुछ अता-पता ही नहीं
किन्ही पलकों में खो रहा होगा

❑❑❑

तिरी दिलकश अदा में जी के हर मौसम निकलता है
मिलूँ जिससे भी मैं वो ही तेरा हमदम निकलता है

तुम्हें कैसे मैं बतलाऊँ नहीं आँसू ख़ुशी के ये
हँसी की आड़ लेकर के ये मेरा ग़म निकलता है

भली है मौत जो इक बार में ही ले के जाती है
तुम्हारी इस ख़ुमारी में तो पल-पल दम निकलता है

बहुत सी बात कहना चाहता हूँ मैं ज़माने को
मगर अल्फ़ाज़ में ये दर्द बेहद कम निकलता है

अजब-सा ज़ख़्म है इक दर्द मीठा-सा उभरता है
जो देता घाव है आखिर वही मरहम निकलता है

❑❑❑

इश्क़ ने कुछ यूँ छुआ कि सबसे लड़कर आ गये
खटखटाए बिन युँही वो दिल के अंदर आ गये

जब पुरानी डायरी में मिल गई तस्वीर इक
ख़ुश्क आँखों में कई ग़म के समंदर आ गये

दिल पुरानी इक हवेली-सा पड़ा गुमनाम था
एक हिचकी संग यादों के कबूतर आ गये

काश घर में एक रोने की जगह होती कहीं
जब भी जी चाहा गए, जीभर के रोकर आ गये

'सौम्य' उसके बिन कहीं पर कुछ भी तो अच्छा न था
पास उसके हर किसी को मार ठोकर आ गये

❑❑❑

कुछ अधूरी ख़्वाहिशों में तुमको सोचा था बहुत
तुम किसी दिन आ मिलोगे, ये भरोसा था बहुत

वक़्त ने कोशिश बहुत की ज़ख़्म भरने की मगर
ख़ूबसूरत घाव था मैंने खरोचा था बहुत

क्या ग़लत है गर मुझे उससे मुहब्बत हो गई
वो भी थी बेहद अकेली, मैं भी तनहा था बहुत

वो समय की रेलगाड़ी में चढ़ी और चल पड़ी
देर तक पीछे ये दिल बच्चों सा दौड़ा था बहुत

❑❑❑

ज़िंदगानी थम गई है आपके जाने के बाद
कुछ कहीं अच्छा नहीं है आपके जाने के बाद

इक नदी की ख़ुदकुशी से प्यास के मेले लगे
मर चुकी ज़िंदादिली है आपके जाने के बाद

मन में बैठी राधिका नित राह देखे श्याम की
सिर्फ आँसू की झड़ी है आपके जाने के बाद

आइने के आँसुओं को पोंछ न पाया था मैं
और आँखें रो पड़ी हैं आपके जाने के बाद

है कहाँ गुमनाम चाहत का मसीहा आजकल
याद आकर पूछती है आपके जाने के बाद

चाँद तारे और जुगनू सो न पाए रातभर
तिलमिलाती चाँदनी है आपके जाने के बाद

'सौम्य' तुम जाते हुए सारी कहानी ले गए
शाम शायद आख़िरी है आपके जाने के बाद

❑❑❑